राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 460
इच्छाधारी चोर
नागराज

इच्छाधारी चोर

कथाः	चित्रः	इंकिंगः	सुलेख एवं रंगः	सम्पादकः
जॉली सिन्हा	अनुपम सिन्हा	विनोदकुमार	सुनील पाण्डेय	मनीष गुप्ता

अब मुझको सिर्फ तेरी इच्छाधारी शक्ति लेनी है नागराज! उसके बाद मैं ब्रह्मा बन जाऊंगा! रूप बदल सकने वाली शक्ति इच्छाधारी शक्ति की मदद से मैं एक नई सृष्टि की रचना करूंगा! और साथ ही साथ देवताओं से बदला भी लूंगा!

जो इच्छाधारी शक्ति तेरे पास है वह नागों से चुराई गई इच्छाधारी शक्ति है! तू एक साधारण चोर बनकर रह गया है त्रिशंकु! और चोरों को दंड देना नागराज को बखूबी आता है!

त्रिशंकु-
हमारे पुराणों का वह पात्र जो धरती और स्वर्ग के बीच में लटका रह गया था-
और कुछ लोगों का मानना है कि वह आज भी वहीं पर उसी स्थिति में लटका हुआ है-
और शायद यह सच भी है-
हाऽऽऽह!
शायद इस दुनिया में ईश्वर नाम की कोई चीज है ही नहीं! अगर होती तो मुझको ऐसा धोखा न मिलता! मुझे धोखा देने वाले इन्द्र और विश्वामित्र दोनों ही आज भी कहीं न कहीं मजे उड़ा रहे होंगे! अगर भगवान हैं तो वह मुझे इन धोखेबाजों से बदला लेने की शक्ति दें! अभी दें! तुरन्त दें!
अरे! ये... ये कैसी अनोखी ऊर्जा है जो मुझ तक पहुंच रही है! इतने युगों तक हवा में लटके रहने के दौरान मैंने कई तरह की ऊर्जाओं का अनुभव किया है। लेकिन ये तो कुछ अलग ही तरह की ऊर्जा है!
इसको जरूर ईश्वर ने सीधे मेरे पास भेजा है! मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर है ये ऊर्जा! धन्यवाद प्रभु! धन्यवाद!
प्रभु से पहले मुझे धन्यवाद दो! और फिर मुझे ये बताओ कि तुम कौन हो?

मैं त्रिशंकु हूं! कई युगों से यहीं पर लटका हुआ हूं! न तो मुझे देवता स्वर्गलोक में जाने देते हैं और न ही ऋषि विश्वामित्र की तप शक्ति मुझे धरती पर उतरने देती है!
लेकिन आज पहली बार मुझको अपने शरीर में एक अद्भुत ऊर्जा का संचार होता महसूस हो रहा है! म... मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं कुछ भी कर सकता हूं!
परन्तु तुम कौन हो? तुम मुझको दिखाई क्यों नहीं पड़ रहे हो?
दिखाई पड़ने की कोशिश में ही मेरा ये हाल हो गया है! तुमको अद्भुत शक्ति देने वाली ये ऊर्जा ही अब मेरा शरीर बन चुकी है। मैं इस ऊर्जा, इच्छाधारी शक्ति से बना एक प्राणी बनकर रह गया हूं!
मुझे तो अपना असली नाम तक याद नहीं! मुझे सीधू कहा जाता था! यानी कांच की तरह आर-पार दिखाई पड़ने वाला! पृथ्वी पर एक इच्छाधारी मानव- नाग नागराज की इच्छाधारी शक्ति को मैंने कुछ ज्यादा ही मात्रा में खींच लिया था, इसीलिए ठोस रूप लेता मेरा शरीर फट गया था! कई सालों तक हवा में बिखरते रहने के बाद मैं यहां तक पहुंचा हूं! किसी मानव से मिला हूं!
मुझे शरीर पाने में मेरी मदद करो, त्रिशंकु!
मुझे इच्छाधारी शक्ति चाहिए और तुमको शरीर! हम एक-दूसरे की सहायता कर सकते हैं सीधू!
तुम मेरे शरीर को अपना शरीर समझो...
...मेरे शरीर में प्रवेश करो!
अभी लो, त्रिशंकु!
सीधू और नागराज की रोमांचक मुठभेड़ के बारे में जानें इच्छाधारी में
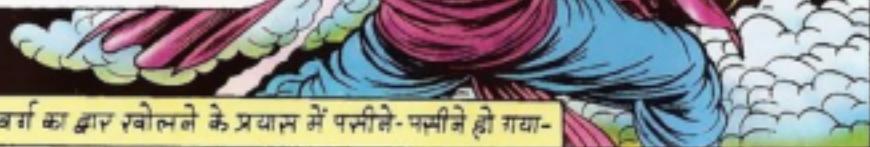
हा हा हा! अद्भुत शक्ति मिल गई है मुझको! अब मैं देवताओं को भी चुनौती देने की शक्ति रखता हूं! इन बादलों में चमकती बिजलियों से मैं एक ऐसा हथियार बनाऊंगा जो इन्द्र के वज्र से भी ज्यादा शक्तिशाली होगा! और जब मैं इस अस्त्र से स्वर्ग का द्वार खोलकर अंदर प्रवेश करूंगा तो देवता भी मेरा सामना नहीं कर पाएंगे!

बन गया है मेरा अद्भुत अस्त्र ताड़ितास्त्र! और इससे निकलती ऊर्जा स्वर्ग के द्वार को प्रकट करके खोलने पर मजबूर कर देगी! अरे! स्वर्ग का द्वार तो हल्का-हल्का नजर आ रहा है लेकिन तड़ितास्त्र की ऊर्जा इसको खोल नहीं पा रही है! मैं अभी इच्छाधारी शक्ति से स्वर्ग के द्वार को शून्य में बदल देता हूं!
त्रिशंकु, स्वर्ग का द्वार खोलने के प्रयास में पसीने-पसीने हो गया-
लेकिन द्वार नहीं खुल सका-
ओफ्फ! व्यर्थ हो गया मेरा प्रयास! ये अद्भुत इच्छाधारी शक्ति भी मेरे काम नहीं आ सकी! मैं हार गया! हार गया त्रिशंकु!
नहीं, त्रिशंकु! हार मत मानो! ये द्वार खुलेगा! अवश्य खुलेगा! हमको बस और इच्छाधारी शक्ति की आवश्यकता है!
लेकिन और इच्छाधारी शक्ति हमको मिलेगी कहां पर?
धरती पर!
जहां ढेरों इच्छाधारी शक्ति रखने वाले नाग मौजूद हैं!
परन्तु मैं धरती पर नहीं जा सकता! विश्वामित्र की तप शक्ति मुझको ऐसा नहीं करने देगी!
तप शक्ति अब तुमको नहीं रोकेगी, त्रिशंकु! क्योंकि अब तुमने अपना शरीर मुझको दे दिया है। और मैं धरती पर जा सकता हूं!
हां! ऐसा हो सकता है! कोशिश करके देखने में कोई नुकसान नहीं है! चलो, हम धरती पर चलते हैं!
एक भयानक खतरा उस धरती की तरफ रवाना हो गया था-

जहां पर पहले से ही खतरों की कोई कमी नहीं थी-
तेरा ट्रैकिंग करते हुए अमरनाथ जाने का आइडिया खतरनाक होता जा रहा है सागर! हम आतंकवादियों के एरिया में आ गए हैं। अगर किसी को पता चल गया कि तू कौन है तो मुसीबत आ जाएगी!
रिलैक्स यार! मैं सिक्योरिटी वालों के पहरे की कैद से तंग आ गया था! और रही मैं कौन हूं यह जानने की बात, तो ये तो मेरे घरवाले भी नहीं जानते कि इस वक्त मैं यहां पर हूं! यहां मुझे कौन जानेगा?
तुझे हम जानते हैं!
बहुत दिनों से हम तुझ पर नजर रखे हुए थे! लेकिन हमको यह नहीं पता था कि तू खुद ही यहां पर आकर हमारी झोली में टपक पड़ेगा!

सागर तुरन्त स्थिति की गंभीरता को समझ गया-
फ्रेंड्स, ड्रॉप! नीचे गिरो!
ये हम पर गोलियां नहीं चलाएंगे। क्योंकि ये मुझको जिन्दा पकड़ना चाहते हैं!
अगर मैं इन शैतानों के हाथ में आ गया तो पूरे देश के लिए खतरा पैदा हो सकता है! और यह सब मेरी सिक्योरिटी तोड़ने की नादानी के कारण होगा!
कुछ ही पलों में तीनों 'हाईकर' आतंकवादियों की नजरों से दूर हो चुके थे-
रस्सियां काटो फ्रेंड्स और बैग से स्कीईंग निकालो! हम स्कीईंग करते हुए इन कमीनों के चंगुल से बच निकलेंगे!
आतंकवादियों और हाईकरों के बीच की दूरी तेजी से बढ़ती जा रही थी-
लेकिन यह दूरी भी आतंकवादियों के चंगुल से बच निकलने के लिए नाकाफी थी-
ओ गॉड! बर्फ के अंदर से ये... ये क्या निकल रहा है?

मुझे स्लोसी कहते हैं! अपने इन दोस्तों को, जिनको तुम आतंकवादी कहते हो, सीमा के पार पहुंचाना मेरा काम है! और बदले में मुझको मिलना है, खास-पिस हट्टे-कट्टे हिन्दुस्तानी सैनिकों का मांस! सीमा के इस भाग से तो मेरी इजाजत के बगैर कोई भी न तो इस पार से उस पार जा सकता है और न ही उस पार से इस पार आ सकता है!
तुम्हारा नर्म-नर्म मांस देखकर मेरे मुंह में पानी आ रहा है। पर क्या करूं? मेरे दोस्तों ने तुमको खाने से सख्त मना किया है! कहा है कि तुम्हारे बदले मुझे पूरा हिन्दुस्तान खाने को मिलेगा!

हिन्दुस्तान को पचाना इतना आसान नहीं था-
डेम इट! मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि वह सिक्योरिटी वालों के रहते भला कैसे गायब हो सकता है?
गलती तो हुई है! सर! लेकिन वे हमसे यह झूठ बोलकर गए कि वे बगल की दुकान से फूल लेकर आ रहे हैं!
न जाने ये बच्चा कब सुधरेगा? आप तुरन्त पता लगाइए कि इस वक्त वह कहां पर हो सकता है?
पता लगा रहे हैं सर! जल्दी ही आपके नाती का पता चल जाएगा!
सर! सर!
क्या हुआ पी. ए. अय्यर! तुम्हारे चेहरे पर हवाइयां क्यों उड़ रही हैं? क्या पाकिस्तान ने न्यूक्लियर बम छोड़ने का ऐलान कर दिया है?
एटम बम जैसी ही बुरी खबर है सर!
अभी-अभी लश्करे-तयब्बा की तरफ से ये पैकेट आया है।
इसमें ये दो फोटोग्राफ्स हैं! एक में आपके नाती सागर को आतंकवादियों की गिरफ्त में दिखाया गया है।
और दूसरे में उन तीन आतंकवादी सरगनाओं के चेहरे हैं जो हिन्दुस्तान की जेलों में बंद हैं।
मैसेज साफ है, अय्यर! आतंकवादी सागर के बदले इन राक्षसों की रिहाई चाहते हैं!

और ऐसा हो नहीं सकता!
ये... ये आप क्या कह रहे हैं सर? सब जानते हैं कि आपका नाती सागर आपके जिगर का टुकड़ा है!
हर बच्चा अपने परिवार वालों के जिगर का टुकड़ा होता है मेजर!
क्या हम सैकड़ों बेगुनाहों का कत्ल करने वाले इन तीन दरिन्दों को सिर्फ इसलिए छोड़ दें, क्योंकि इनके साथियों ने प्रधानमंत्री के नाती का अपहरण किया है? क्या यही निर्णय आप तब भी लेते अगर आतंकवादियों ने किसी गरीब के बच्चे का अपहरण किया होता?
शायद नहीं सर!...
...लेकिन उसका कारण यह नहीं होता कि बच्चा गरीब का है या प्रधानमंत्री का! आपके नाती को अगवा करके मुट्ठी भर आतंकवादियों ने इस देश का प्रतिनिधित्त्व करने वालों को चुनौती दी है! इस देश के हर एक नागरिक को ललकारा है! हमारे पूरे सिस्टम को नाकारा दिखाने की कोशिश की है! और इस हरकत का जवाब देकर हमको यह साबित करना है हिन्दुस्तान वह चट्टान है जिसको आतंकवाद की लहरों के थपेड़े हिला भी नहीं सकते!
तुम्हारे तर्क में दम है मेजर! सागर को छुड़ाना होगा! लेकिन हम उन शैतानों को छोड़ भी तो नहीं सकते! फिर क्या करें हम?
इस स्थिति से सिर्फ एक ही शख्स निपट सकता है। वह जिसकी परछाई तक देखते ही आतंकवाद गिड़गिड़ाने लगता है!
नागराज!
नागराज! ओ यस! उसको तुरन्त बुलाओ!

नागराज ने दिल्ली पहुंचने में ज्यादा वक्त तो नहीं लगाया-
लेकिन उसकी राय सबको चौंका देने वाली थी-
मेरे विचार से तो तीनों आतंकवादी सरगनाओं को रिहा कर देना चाहिए!
ये... ये तुम क्या कह रहे हो नागराज? आतंकवाद के दुश्मन होकर ऐसी सलाह दे रहे हो?
अगर सागर मर गया तो पूरे देश का सर शर्म से झुक जाएगा!
उन तीनों को हम दुबारा भी पकड़ सकते हैं! अब हमको आतंकवादियों के निर्देशों का इंतजार करना चाहिए!
निर्देश आ चुके हैं नागराज! ये लेन-देन ठीक अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा यानी L.O.C. पर होगा! और हमारी पुलिस या सेना उस वक्त L.O.C से कम से कम एक किलोमीटर दूर रहेगी!
इस तरह तो तीनों आतंकवादी सरगना आराम से सीमा पार कर जाएंगे! और हम फिर उन पर हाथ तो क्या नजर तक नहीं डाल पाएंगे!
पर हमको ऐसा ही करना होगा!
ठीक आतंकवादियों के निर्देशों के अनुसार!
अब मीडिया वाले हमारी खाल उधेड़ देंगे!
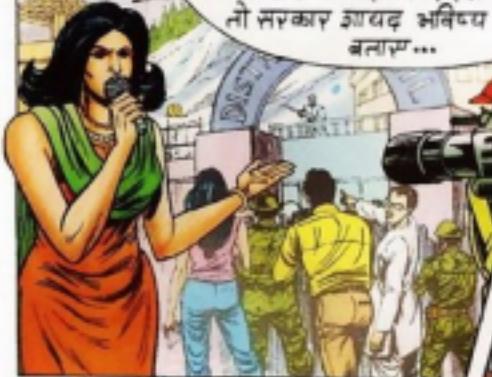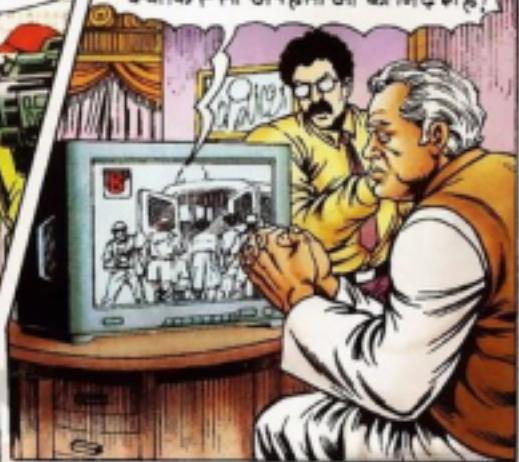
प्रधानमंत्री का डर सही था-
सरकार ने आखिरकार आतंकवादियों की मांग के आगे घुटने टेक ही डाले! मजे की बात तो यह है कि सरकार ने आतंकवादियों से कोई बातचीत करने की कोशिश भी नहीं की! इसका कारण तो सरकार शायद भविष्य में बताए...
...लेकिन फिलहाल तो आपके सामने तीनों आतंकवादी सरगनाओं को जेल से रिहा कराके एल. ओ. सी. की तरफ ले जाया जा रहा है! वहां का हाल हम आपको नहीं दिखा पाएंगे! क्योंकि वहां पर हम तो क्या, सेना तक को जाने से मना कर दिया गया है! क्योंकि ऐसा अपहर्ताओं का निर्देश है!
ओफ़! सारे देश में हमारी थू-थू हो रही है! हमको कोई और रास्ता निकालना चाहिए था!
धीरज रखिए सर! नागराज ने सलाह कुछ सोच-समझकर ही दी होगी!
एल. ओ. सी. पर-
आ गए! तीनों कमांडर आ गए हैं! हिन्दुस्तानी सरकार ने तो बड़ी जल्दी घुटने टेक दिए! कहीं इसमें कोई चाल तो नहीं है!
लगता तो नहीं है! तीनों कमांडरों को तो मैं साफ-साफ पहचान रहा हूं!
और उनके साथ कोई और आता हुआ भी नहीं दिख रहा है!

ये नदी यहां पर अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा की पहचान है। इस पार हिन्दुस्तानी कब्जा है और उस पार पाकिस्तानी कब्जा! पर ये पुल 'नो मैन्स जोन' है। यहां से आगे मैं नहीं जा सकता!
अब उधर से तीनों बंधक इधर चलेंगे और इधर से तीनों आतंकवादी सरगना उधर जाएंगे! इस हाथ ले और उस हाथ दे!
हमें मंजूर है! लेकिन याद रखना, कोई चाल चली तो तीनों की लाशें नीचे नदी में बह रही होंगी!
ऐसा नहीं होगा...
लेन-देन इतनी आसानी से हो जाएगा--
इसकी उम्मीद आतंकवादियों को कतई नहीं थी-
खुशआमदीद! खुशआमदीद! पाकिस्तान में आपका खैर मकदम करके मुझे बेइन्तहा खुशी हो रही है!
पाकिस्तान में! लेकिन हम तो कश्मीर में खड़े हैं! और कश्मीर तो हिन्दुस्तान का हिस्सा है!
ये... ये आप क्या कर रहे हैं, कमांडर? गुलाम कश्मीर तो हमारा है! हिन्दुस्तान की जेल में रहकर आपकी बोली बदल गई है क्या?
सिर्फ बोली ही नहीं खान भाई...

...इसकी तो शक्ल भी बदल रही है!
वह इसलिए क्योंकि हम आतंकवादी सरगना नहीं हैं। वे तो अभी भी जेल में बंद हैं!
हम नागराज के शरीर में वास करने वाले इच्छाधारी नाग हैं, जिन्होंने अब तक इच्छाधारी शक्ति की मदद से तीनों आतंकवादी सरगनाओं का रूप धरा हुआ था!
इस वक्त- पृथ्वीलोक के वातावरण में-
त्रिशंकु! मुझे इच्छाधारी शक्ति का आभास हो रहा है! लगता है कि हमारे इच्छाधारी शक्ति प्राप्त करने वाले अभियान का श्रीगणेश हो गया है!
उधर चलो!
तीनों आतंकवादी अब नागों के चंगुल में थे-
तुम शैतानों का खेल खत्म हो गया है! अब तुम सब भी अपने कमांडरों के साथ जेल में ही दिन गुजारोगे!
लेकिन बेहोश होते- होते भी-
आतंकवादियों ने उस खतरे को आवाज दे ही दी-
जिसका नाम था-
ग्लोसी!

अगले ही पल इच्छाधारी सर्पों ने अपने-आपको एक घातक शिकंजे में कसा हुआ पाया-
आऽऽऽह! ये कैसा अजीब शिकंजा है जो बर्फ के अंदर से प्रकट हो रहा है!
ये शिकंजा बहुत मजबूत है! मेरी हड्डियां कड़कड़ा रही हैं!
तुम तीनों धोखेबाजों को इस धोखे की कीमत अपनी जान से चुकानी पड़ेगी!
स्लोसी तुम सबकी जान को जिन्दगी की सीमा रेखा के उस पार भेज देगा!
खाऊंगा तुमको!
देखो न! मेरा पेट भूख से कैसा पिचक गया है!
मौत का दूत नागों के करीब था-
लेकिन जिन्दगी का फरिश्ता भी ज्यादा दूर नहीं था-
आऽऽऽह! यह कैसा विचित्र सर्प है जिसके दुम तक के वार में मुझको विचलित करने की शक्ति है!
यह विचित्र सर्प...

...नागराज का इच्छाधारी रूप है!
अब तुम तीनों इच्छाधारी सर्पों का काम खत्म हो गया है! अब तुम तीनों सर्प रूप में बदलकर मेरे शरीर में वापस समा जाओ!
तीनों सर्पों का रूप बदलते ही इच्छाधारी शक्ति वातावरण में फैलने लगी-
और उसको सोखने के प्रयास भी शुरू हो गए-
इच्छाधारी शक्ति वातावरण में फैल रही है! खींच लो इसको त्रिशंकु और अपनी शक्ति बढ़ाओ!
अभी लो, मी श्रू!
लेकिन इसको सोखने के बाद हम इस शक्ति के स्रोत तक चलेंगे। ताकि इसको और इच्छाधारी शक्ति मिल सके!

कहानी 19 पेज से जारी

असर लगभग
ही सामने आ गया-
क्या बात है? तुम लोग नागरूप में आने के बाद भी मेरे शरीर में प्रवेश क्यों नहीं कर रहे हो?
ये तो एकदम निस्तेज हो गए हैं!
नागों का स्पर्श करते ही असलियत नागराज के सामने आ गई-
ओह! इनके अंदर तो इच्छाधारी शक्ति एकदम खत्म हो गई है! और ऐसा होने से सैकड़ों वर्ष की आयु के ये सांप एकाएक अशक्त हो गए हैं! ...
ऐसा हुआ
इनकी इच्छाधारी
एकाएक कहां
गई...
अब तेरा भी यही हाल होगा नागराज! तू भी अशक्त होकर यहीं पर पड़ा-पड़ा दम तोड़ेगा!
sss है!
इससे भी बड़ी दिक्कत यह है कि वार करने के लिए इसके पास छः हाथ हैं! और मेरे पास सिर्फ दो!
धड़ाक
रहने के कारण इसका
भी बर्फ जैसा कठोर है! और
इसके वार भी उतने ही
जोरदार हैं!
स्लोसी के इस वार ने नागराज को हवा में उछाल दिया-

और ढलान पर से लुढ़कता हुआ नागराज का शरीर, कई किलोमीटर गहरी खाई के ऊपर लटक गया-
आsss ह! बाल-बाल बचा! लेकिन कब तक बचा रहूंगा! इसकी एक ही ठोकर मुझको खाई में गिरा देगी! और इस स्थिति से बचने के लिए मैं इच्छाधारी शक्ति को प्रयोग करने का खतरा मोल नहीं ले सकता!
मैं देख चुका हूं कि यहां पर इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करने में खतरा है!
अब तू मर नागराज! मेरा समय खराब मत कर!
त्रिशंकु ने इच्छाधारी शक्ति के स्रोत को ढूंढ़ लिया था-
ये तो नागराज है त्रिशंकु! वही जिसकी शक्ति सोखने के चक्कर में मैं फट पड़ा था!
इसकी काफी धारी शक्ति तो हो गई है! लेकि अभी भी इसके पर्याप्त इच्छा शक्ति है!
तब तो हम इंतजार करेंगे सी थ्रू, क्योंकि इस स्थिति से बचने के लिए इसको इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करना ही पड़ेगा!

राज बचने के
तलाश रहा था-
रस्सी का प्रयोग
रहेगा क्योंकि ठंड
ह पाने के कारण वह
ही टूट जाएगी!
न खाई में गिरने
चने का एक और
स्ता है!
खिर मेरी किसी
सतह पर चिपक सकने
शक्ति कब काम
आएगी!
लेकिन इस
कला में सिर्फ नागराज को ही
महारत हासिल नहीं थी-
चट्टानी
पर नागराज की
यां चिपक गई-
एलोसी भी इस
कला में माहिर था-
नागराज धीरे-धीरे किसी सुरक्षित
की तलाश में नीचे उतरने लगा-
तड़ाक
तू क्या समझता है कि चट्टानों पर
चिपक पाना सिर्फ तुझको ही आता है!
एलोसी की भुजाएं भी ये करतब
करना जानती हैं!

ऐसा है तो देखते हैं कि चट्टानों पर से पहले किसकी पकड़ ढीली पड़ती है!
अद्भुत लड़ाई थी यह! दोनों के ही शरीर हवा में झूल रहे और एक हल्की सी चूक किसी को भी मौत की खाई में ढकेल सकती थी-
ये चट्टानों पर पकड़ बनाए रखने के लिए अपने हाथों का बारी-बारी से इस्तेमाल कर रहा है!
जबकि मैं अपना हाथ तक नहीं सकता! इस पकड़ हटाने के लिए ध्वंसक सर्पों का सहारा पड़ेगा!
ध्वंसक सर्पों ने उस चट्टान को चूर-चूर कर दिया जिस पर एलोसी की पकड़ बनी हुई थी-
लेकिन-
ओह! इसने तो मकड़े की तरह बाकी हाथों से चट्टान को पकड़ लिया और गिरने से बच गया!
अब ध्वंसक सर्पों का इसके हाथों पर ही कर शायद बर्फ में रहने के एलोसी गर्मी का आदी

वंसक सर्पों का स्लोसी
र असर होने लगा-
आऽऽऽह!
ये अजीब सर्प गर्मी पैदा करके मेरी खाल में दरारें डाल रहे हैं!
इसकी पकड़ ढीली पड़ रही! ये जल्दी ही नीचे जा गिरेगा!
लेकिन हार का आभास होते ही स्लोसी ने अपनी चाल को बदल दिया-
अब मैं ऐसी जगह से वार करूंगा जहां पर तेरे पटारवा सर्प मुझ तक पहुंच न पाएं!
मैं तो नीचे नहीं गिरा परन्तु जरूर गिरेगा!
तेजी से ऊपर चढ़ता हुआ स्लोसी जल्दी ही नागराज की आंखों से ओझल हो गया-
और फिर- नागराज के आस-पास की चट्टानें चटकने लगीं-
कड़ड़ड़ड़ड़
ओऽऽऽह! ये चट्टानें तोड़कर मुझे गिराना चाहता है! और बगैर दिखे मैं इस पर वार नहीं कर सकता!
अगर मुझे नीचे गिरने से बचना है तो इसको नीचे गिराना ही पड़ेगा!
पर कैसे? ओऽऽऽह! वह बर्फ से ढकी चोटी मेरी मदद कर सकती है!
नागफनी सर्प! तुमको उस चोटी तक जल्दी से जल्दी पहुंचकर उसको ध्वंसक सर्पों से पाट देना है! जाओ!

नागराज जो भी योजना बना रहा था, उसका जल्दी से जल्दी पूरा होना बहुत जरूरी था, क्योंकि नागराज के पास अब ज्यादा वक्त नहीं था-
ओफ़! इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग जल्दी कर नागराज! हमको सौंप दे अपनी इच्छाधारी शक्ति! वर्ना तू गिरकर मर जाएगा और तेरे साथ-साथ तेरी इच्छाधारी शक्ति भी खत्म हो जाएगी!
नागराज का मरना लगभग तय लग रहा था-
ओह! चट्टानें टूट रही हैं! पकड़ बनाए रखने के स्थान तेजी से खत्म होते जा रहे हैं!
क्योंकि हवा में इस वक्त सिर्फ एक शख्स लटका हुआ था! नागराज-
या शायद नहीं थी-
ये... ये क्या?
सतह पर खड़े हुए स्लोसी के गिरने की संभावना तो लगभग शून्य थी-

ओह! बर्फीले पहाड़
विस्फोट हो गया है!
र बर्फ का भारी ढेर तेज
ति से मेरी तरफ बढ़ रहा
! क्या करूं? मेरे लिए
भागने की जगह तक
हीं है। पर ये हुआ
कैसे?
य कमाल मेरे ध्वंसक
र्पों का है, जिन्होंने बर्फ
अंदर घुसकर विस्फोट
किया है!
अब मेरा चट्टानों
लटकना काम आएगा!
र्फ का तूफान बगैर मुझे नुकसान
चाए मेरे सिर के ऊपर से निकल जाएगा!
बर्फ के तेजी से फिसलते ढेर ने स्लोमी को तूफान में सूखे पत्ते की तरह उड़ा दिया-
आ
ऽऽ
ह!
और स्लोमी का शरीर कई किलोमीटर गहरी खाई में चट्टानों की तरफ रवाना हो गया-
खत्म हो गया स्लोमी!
अब मुझे अपने सर्पों द्वारा इच्छाधारी शक्ति खोने का कारण पता करना होगा!
कारण पास में ही था! लेकिन नागराज की नजरों से दूर भी था-
ये क्या किया तूने नागराज? इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग तक नहीं किया?
अब क्या हमको इतनी सी ही इच्छाधारी शक्ति से संतोष करना पड़ेगा सी थ्रू?

इसकी आवश्यकता नहीं है त्रिशंकु! पृथ्वी पर इच्छाधारी शक्ति धारण करने वाले सर्पों की भरमार है! और नागराज के शरीर में वास करने वाले तीन इच्छाधारी सर्पों की शक्ति खींचने के बाद मुझे उस स्थान का पता चल गया है, जहां पर इस शक्ति का भंडार है!
बस यहां से फटाफट निकल लो! अग कहीं नागराज को हमारे यह पर होने का आभास हो गया तो जितनी इच्छाधारी शक्ति इकट्ठी की है वह भी जात रहेगी!
नागराज को आभास हो गया था-
नागों के शरीर से इच्छाधारी शक्ति गायब होकर कहीं और गई है!
क्योंकि मुझको वातावरण में बिखरी हुई उस इच्छाधारी शक्ति का आभास हो रहा है जो बच गई है!
जरूर कोई गहरा षड्यंत्र रचा जा रहा है!
नागराज जरूर चिन्तित था! लेकिन पूरा हिन्दुस्तान खुशी से झूम रहा था-
कमाल कर दिया नागराज तुमने! आतंकवादियों के गाल पर ऐसा करारा तमाचा तो हम भी आज तक नहीं मार पाए!
जब तक तुम जैसे देशभक्त मौजूद हैं इस देश पर कोई आंच भी नहीं आ सकती!
ये कमाल मेरा नहीं बल्कि उस इच्छाधारी शक्ति का है जो नागों को देवों से आशीर्वाद स्वरूप मिली है!

इच्छाधारी शक्ति जल्दी ही नागों के लिए भी वरदान के बजाय शाप सिद्ध होने वाली थी-
और दुनिया के लिए भी-
ये हम कहां आ गए हैं, सी थ्रू?
इस उजाड़ बियावान में इच्छाधारी शक्ति कहां मिलेगी?
ये इच्छाधारी नागों का गुप्त निवास है त्रिशंकु! इस द्वीप को नागद्वीप कहते हैं।
यही तो वह स्थान है जिसका पता मुझको इच्छाधारी शक्ति खींचते वक्त चला था!
ओह! यहां पर तो ढेर सारे सर्प हैं! हमको काम चुपचाप तरीके से शुरू करना होगा! वर्ना हमारा अभियान विफल हो जाएगा! और मुख्य समस्या यह है कि सर्पों का रूप बदलने पर ही हम वह शक्ति ग्रहण कर सकते हैं! भला हम सांपों को ऐसा करने के लिए मजबूर कैसे करेंगे?
उसके ढेरों तरीके हैं मेरे पास!
सबसे पहले तरीका नंबर एक आजमाते हैं!
इच्छाधारी शक्ति की मदद से एक सुंदर नागकन्या का रूप धारण करके!
उस 'सुंदर नागकन्या' को देखकर नागद्वीप के प्रहरियों की आंखें फटी की फटी रह गईं-
तुम... तुम कौन हो नाग सुंदरी? पहले तो तुमको इस द्वीप पर कभी नहीं देखा!

मैं पाताल के नागराजा तक्षक की पुत्री हूं! अपने लिए एक सुयोग्य वर की तलाश में पूरी दुनिया में भटक रही हूं! किसी सजीले सर्प जवान की तलाश है मुझे!
जिससे मैं विवाह करूंगी वह मुझको पाने के साथ-साथ पाताल लोक का सर्प राज्य भी पाएगा!
म... मुझसे विवाह कर लो नाग सुंदरी!
देखो, कितना गठीला शरीर है मेरा!
और बहादुर तो मैं इतना हूं कि नागों ने पूरे नागद्वीप की सुरक्षा मुझ पर छोड़ रखी है! आऽऽऽह!
चुप रह झूठे! मुख्य प्रहरी तो मैं हूं! तू तो मेरे नीचे काम करता है!
और रही बदन की बात तो तुमसे ज्यादा कसरत करता हूं मैं!
मुझसे विवाह करो सुंदरी! मैं अभी पंडित और मालाएं लेकर आता हूं!
मुझे तो तुम दोनों ही सुंदर लग रहे हो! पर तुम अभी मानव रूप में हो! नागरूप में आओ तो मुझे निर्णय लेने में आसानी होगी!
अभी लो! इसमें क्या है!
मेरा नागरूप जरा ध्यान से देखना, सुंदरी! मुझको ही चुनना!
अब तुम्हारे संबंधी तुम्हारी हड्डियों को चुनेंगे मूर्खो!
क्योंकि मैं तुम्हारी इच्छाधारी शक्ति चूसकर तुमको मेरे के बराबर कर दूंगी!

अब हम क्या करेंगे मीथ्रू? पता नहीं दूसरे नागों पर यह चाल चले न चले!
अब और इच्छाधारी शक्ति पाने के लिए थोड़ी इच्छाधारी शक्ति खर्च करनी पड़ेगी त्रिशंकु!
इच्छाधारी शक्ति के वार ने चट्टानों के बंधन ढीले कर दिए-
नागद्वीप वासियों के अधिकतर घर उस पहाड़ी के नीचे बसे हैं। उस पहाड़ी पर इच्छाधारी शक्ति का वार करो! और फिर देखो मजा!
और चट्टानें नागद्वीप पर बरस पड़ीं-
ये... ये क्या हो रहा है? बगैर किसी भूकंप के चट्टानें क्यों गिर रही हैं?
ये बाद में सोचना! पहले हमको इन चट्टानों से बचना है!
और इनसे बचने का एक ही रास्ता है! सर्प रूप में बदलकर बांबियों में घुस जाना!
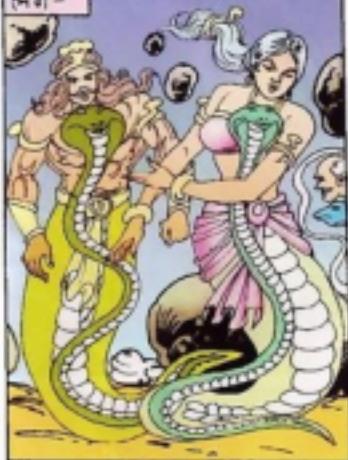
नागद्वीप के वासी इच्छाधारी नाग तेजी से नागरूप में बदलने लगे-
लेकिन कुछ ही भाग्यशाली नाग जमीन के नीचे बनी बांबियों में घुस पाए-
क्योंकि इच्छाधारी शक्ति खिंच जाने के कारण कई नागों में बांबियों में घुसने तक की शक्ति नहीं बची थी-
और जो बांबी में घुस गए थे, उनमें बाहर निकलने की शक्ति नहीं बची थी।
नागद्वीप देखते ही देखते वीरान नजर आने लगा था-
लेकिन त्रिशंकु और सी थ्रू को इच्छाधारी शक्ति का अथाह भंडार मिल चुका था-
ये क्या हो रहा है नागद्वीप में? मुझे आभास हो रहा है कि यह मुसीबत प्राकृतिक नहीं है बल्कि किसी दुष्ट का षड़यंत्र है।
तुम्हारा शरीर भी कमाल का है त्रिशंकु! मैं तो इसमें आधी इच्छाधारी शक्ति सोखकर ही फट गया था।
अभी मेरा शरीर इससे दुगुनी इच्छाधारी शक्ति सोख सकता है सी थ्रू!

और वह कारण यहां पर है!
तू है इस विनाश का कारण! बता कौन है तू और ऐसा तूने किस कारण से किया है? उसके बाद मैं तुझे दंड दूंगा!
कालदूत! तू... तू तो कालदूत है! मुझको उम्मीद नहीं थी कि मेरी तुझसे यहां पर भेंट होगी!
तू मुझको जानता है, लेकिन मैं तुझको हचान नहीं पा रहा हूं! ौन है तू? मेरी तुझसे ुलाकात कब और कहां हुई है?
तुझे याद कैसे रहेगा कालदूत? इस बात को तो सदियां गुजर गई हैं! अब मुझको समझ में आ गया इच्छाधारी शक्ति का राज! जो शक्ति मेरे लिए एक नई सृष्टि बनाने में काम में आनी थी वह तुझको दे दी गई!
पहचान मुझे विश्वामित्र के शिष्य कालदूत! मैं त्रिशंकु हूं, त्रिशंकु! जिसको आज तक का सबसे बड़ा धोखा दिया गया है!

त्रिशंकु! तू... तू धरती पर कैसे आ गया ? गुरू विश्वामित्र की तप शक्ति ने तुझको यहां आने से रोका क्यों नहीं ?
क्योंकि मुझे तुझसे अपना हक छीनना था! मुझे पूरी इच्छाधारी शक्ति वापस चाहिए कालदूत मरना नहीं चाहता है तो दे दे मुझको अपनी इच्छाधारी शक्ति
और अपने अनुयायी नागों से भी ऐसा ही करने को कह!
मुनिवर विश्वामित्र तेरे काले इरादों को भांप गए थे! इसीलिए उन्होंने तुझको शून्य में लटकता छोड़ दिया था!
तू यहां पर चाहे जैसे भी आया हो, लेकिन मैं तुझको उसी शून्य में वापस भेजकर रहूंगा, जहां पर तू अभी तक लटका हुआ था!
एक महा भयंकर युद्ध शुरू होने वाला था-
और ये युद्ध हर उस जीव के भविष्य का निर्णय करने वाला था जिसमें इच्छाधारी शक्ति थी-
और इनमें नागराज भी शामिल था-
कुछ समझ में नहीं आ रहा है दादा वेदाचार्य! इच्छाधारी शक्ति को कोई चुरा रहा है! कुछ पता नहीं कि वह चोर प्राणी है कौन और वह इच्छाधारी शक्ति का करेगा क्या?
भला इच्छाधारी शक्ति नागों के अलावा और किसके काम आ सकती है!
तुम शायद इच्छाधारी शक्ति के इतिहास से वाकिफ नहीं हो नागराज इच्छाधारी शक्ति न तो नागों द्वारा पैदा की गई है और न ही इसका मकसद नागों को रूप बदलने की शक्ति देना था!
एक पुरानी कहानी है। पता नहीं सत्य है या कल्पना! अयोध्या के एक राजा थे शंकु! जिन्होंने महर्षि विश्वामित्र की बहुत सेवा की थी! खुश होकर महर्षि ने उनको सशरीर स्वर्ग भेजने का आश्वासन दे डाला!

कहानी: 35 पेज से जा

जा शंकु स्वर्ग की तरफ चले तो जरूर, लेकिन
रे ऋषियों को यह कार्य गलत लगा! इसीलिए
न्होंने स्वर्ग के देवता इंद्र की मदद से शंकु को
पस धरती पर खींचने की चेष्टा की! शंकु
रने लगे तो विश्वामित्र ने अपने तप शक्ति
उनको हवा में ही रोक दिया! उसके बाद
विश्वामित्र ने शंकु को ऊपर स्वर्ग की तरफ
जने की पूरी कोशिश की, लेकिन वे सफल
नहीं हो पाए! शंकु अब हवा में लटके
त्रिशंकु बन चुके थे!

पनी इस असफलता से विश्वामित्र
तने क्रुद्ध हो गए कि उन्होंने अपनी तप
क्ति से उस शक्ति को बुला भेजा जिससे
ह्मा जी ने पूरी सृष्टि की रचना की थी!
ही इच्छाधारी शक्ति थी! इस शक्ति से
विश्वामित्र त्रिशंकु के लिए एक नए स्वर्ग
रचना करने लगे! कहते हैं कि नारियल
र भैंस जैसी वस्तुएं उस समय
विश्वामित्र ने ही रची थीं!

विश्वामित्र ने सृष्टि का काम रोक दिया! लेकिन जिस इच्छाधारी शक्ति को वे बुला चुके थे उसको वापस नहीं भेज सकते थे! इसलिए उस शक्ति को उन्होंने अपने एक परम प्रिय नाग शिष्य के हवाले कर दिया!

उस इच्छाधारी शक्ति को नाग पीढ़ी दर पीढ़ी धारण करते चले आए हैं! और यही शक्ति उनको रूप बदलने की क्षमता भी देती है! पर सच तो यह है कि इस शक्ति से कुछ भी बनाया जा सकता है! अद्भुत शक्तियों का निर्माण किया जा सकता है!

क्योंकि त्रिशंकु मौजूद भी था, और वह धरती पर भी आ चुका था-

अब मुझे तुमसे लड़ने में आसानी होगी कालदूत!

ओह! तूने इच्छाधारी को भारी मात्रा में प्राप्त लिया है त्रिशंकु! वर्ना तू रूप धारण करने में नहीं हो पाता!

अब तेरी ही शक्ति तेरी मौत का कारण बनेगी कालदूत!

ुना था कि तूने विश्वामित्र से
ई शस्त्र कलाएं सीखी थीं!
ेखा मुझको उनका नमूना!
देखना है तो देख जड़ शक्ति का वार! छः-छः हाथ होने के बावजूद तू शस्त्र चलाना तो दूर, हाथों को हिला तक नहीं पाएगा!
ब तू मेरा कैदी बनेगा
ंकु और वापस उसी शून्य
तैरेगा जहां से तू आया था!
कालदूत का सारा ध्यान त्रिशंकु पर था-
ाकि त्रिशंकु कालदूत
ध्यान बंटाकर-
इच्छाधारी शक्ति से एक नई मुसीबत का निर्माण कर रहा था-
आsssह! ये इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग नए प्राणियों के सृजन के लिए कर रहा है!
असावधान
कालदूत पलक झपकते ही तीन भागों में बंट गए।

लेकिन अब त्रिशंकु जड़ हो गया है! अब वह इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता! और मेरे लिए इच्छाधारी शक्ति से बने इस प्राणी को नष्ट करना कोई बड़ी बात नहीं है! मुझे तो इससे लड़ने की जरूरत भी नहीं है! मुझे तो सिर्फ अपनी इच्छाधारी शक्ति का द्वार खोलकर इसकी शक्ति को खींच लेना है! फिर यह प्राणी अपने आप नष्ट हो जाएगा!
लेकिन उस पर अमल करना उतना आसान नहीं था-
योजना बनाना
सरल कार्य
आऽऽऽ ह! मुझ पर वार हो रहा है! मेरी इच्छाधारी शक्ति को कोई खींच रहा है! पर कौन?
त्रिशंकु! तू! ये तू कर रहा है? पर कैसे? तुझे तो मैंने जड़ कर दिया था! और तेरा, मेरी शक्ति से बचने का सवाल ही नहीं है!
त्रिशंकु का शरीर अभी भी जड़ है, काल अब तो इस शरीर को मैं अपनी मर्जी से चला रहा मेरी मदद करने का शुक्रि कालदूत!

लड़ाई में कभी कालदूत का
पड़ा भारी हो रहा था तो कभी
शंकु का-
पूरा नागद्वीप
इस युद्ध का
नतीजा जानने
को बेताब था-
कुछ नजर नहीं आ
रहा है कि पहाड़ी के
ऊपर क्या हो रहा है?
इच्छाधारी नागों को
के लिए ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा-
नतीजा जल्दी ही
सामने आ गया-
नागद्वीप के इच्छाधारी नागों!
मैंने नागद्वीप के विनाशक पर
तो काबू पा लिया है परंतु मैं
ज्यादा देर तक ऐसा नहीं कर
पाऊंगा! ये फिर होश में आकर
तुम सबकी इच्छाधारी शक्ति
को चुराने का प्रयत्न
करेगा!
और इस स्थिति से बचने का
एक ही तरीका है कि तुम सब अपनी-
अपनी इच्छाधारी शक्ति फिलहाल मुझको
सौंप दो! उस शक्ति की मदद से मैं
इस इच्छाधारी चोर को नष्ट
कर दूंगा!
महात्मा का सुझाव
ठीक है! ऐसे हम अपनी इच्छा-
धारी शक्ति को बचा भी सकते हैं और
महात्मा की शक्ति बढ़ा भी सकते हैं!
ठीक है महात्मन्!
हम अपनी- अपनी इच्छाधारी
शक्ति आपको देते हैं!

नागद्वीप वासी तेजी से सर्प रूप में बदल कर अपनी इच्छाधारी शक्ति महात्मा कालदूत तक भेजने लगे-
लेकिन शक्ति का वह भंडार कालदूत तक नहीं पहुंच पाया-
यह क्या? इच्छाधारी शक्ति मुझसे दूर जा रही है! कौन खींच रहा है इसे?
इसे मैं खींच रही हूं! नागों की कोई भी शक्ति राजदंड का आदेश नहीं टाल सकती!
तू... तू...
तुम मेरा नाम तक नहीं जानते हो, क्योंकि तुम कालदूत नहीं हो! कालदूत के वेष में त्रिशंकु हो!
और मैं हूं राजकुमारी विसर्पी!
ठीक समझ
और कालदूत
शक्ति खींचने
बाद अब मेरे पा
इतनी शक्ति है कि
तुमसे तेरी इच्छाध
शक्ति भी जबरन
सकूं!

पहले अपनी इच्छाधारी शक्ति की चिन्ता कर, उसके बाद अपने राजदंड में भरी इच्छाधारी शक्ति को बचाने की कोशिश करना।
ओऽऽऽह! ये...ये सचमुच इच्छाधारी शक्ति को मुझसे खींच रहा है!
मुझे इस शक्ति को बचाना होगा! पर कैसे? कैसे बचाऊं इस शक्ति को!
नागराज! हां, नागराज ही अब मेरी आखिरी उम्मीद है! मुझे नागराज के पास पहुंचना होगा!
और उसके पास पहुंचने के लिए भी मुझे इच्छाधारी शक्ति का इस्तेमाल करना होगा!
भागेगी कहां, नागिन? इच्छाधारी शक्ति मेरी है! और मेरी सम्पत्ति लेकर कोई भाग नहीं सकता!
विसर्पी पर मंडराता खतरा अभी टला नहीं था-
फर्क सिर्फ इतना था कि अब वह खतरा विसर्पी के साथ-साथ नागराज और महानगर पर भी मंडराने वाला था-

महानगर- डेढ़ करोड़ इंसानों की एक ऐसी बस्ती जहां पर दूसरों को तो क्या, कई बार इंसानों को अपना ही पता नहीं लग पाता-
और वह इसलिए क्योंकि हर इंसान अपने काम में इतना मशगूल है कि उसको अपनी चिन्ता करने तक का समय नहीं मिलता-
आज इतनी जल्दी ऑफिस कैसे आ गए राज?
बड़ी मुश्किल से थोड़ा समय मिला है भारती! कुछ रिपोर्ट टाइप करनी थी! सोचा, आज निपटा ही दूं!
करो, करो! तुम्हारे लिए तो सौ पेज भी टाइप करना दस मिनट का काम है! नाग-शक्ति जो है तुम्हारे पास!
भारती का कहना एकदम सही था! आम इंसान तो दस उंगलियों से टाइप करता है-
हो गया काम! अब प्रिंटर से 'प्रिंट-आऊट' निकाल लेता हूं...
लेकिन नागराज के पास तो पचास उंगलियां थीं-
लेकिन प्रिंटर चालू होते ही-
ओ, गॉड! ये... ये क्या?

तुम... तुम यहां पर विसर्पी! और वह भी इच्छाधारी रूप में राजदंड के साथ!
तुम... तुम यहां मेरे ऑफिस में क्या कर रही हो?
घर पर क्यों नहीं चली आई?
ओऽऽऽह! मैं एक बार तुम्हारे तिलिस्मी घर में घुसने का मजा चख चुकी हूं! दुबारा ऐसा खतरा मोल लेना मैंने सही नहीं समझा! इसीलिए ऑफिस में ही छुपकर तुम्हारा इंतजार कर रही थी!
और छुपने के लिए तुमको यही एक जगह मिली थी! खैर छोड़ो! ये बताओ कि तुमको मुझसे मिलने की क्या जरूरत आ पड़ी। और वह भी छुपकर मिलने की?
नागद्वीप पर एक बड़ा संकट आया हुआ है नागराज! नागद्वीप बर्बाद हो चुका है! सुबुक! महात्मा कालदूत तक शक्तिहीन हो चुके हैं!
पर कैसे विसर्पी, कैसे?
विसर्पी, नागराज को पूरा घटनाक्रम सुनाती चली गई-
त्रिशंकु! मुझे शक हुआ था! पर अब वह शक यकीन में बदल चुका है। त्रिशंकु को इच्छाधारी शक्ति वापस करनी ही होगी। यह शक्ति न तो पहले कभी उसकी थी और न ही कभी होगी!
मुझे त्रिशंकु को ढूंढ़ना होगा!

त्रिशंकु खुद विसर्पी की तलाश में नागराज के पास आ पहुंचा था-
या यूं कहें कि त्रिशंकु के शरीर में मौजूद ल्ली थ्रू महानगर पर खतरा बनकर मंडरा रहा था-
ओफ़! यहां पर तो आबादी ही आबादी है। इस आबादी में एक नागिन को ढूंढना तो भूसे के ढेर में सुई ढूंढने के बराबर है!
आहा! समझ में आ गया तरीका! मैं उस नागिन को नहीं बल्कि इच्छाधारी शक्ति को ढूंढता हूं। मेरी इच्छाधारी शक्ति उस राजदंड में मौजूद शक्ति को ढूंढ निकालेगी!
वैसे भी मुझको नागिन से नहीं, राजदंड से काम है!
जा इच्छाधारी शक्ति और ढूंढ अपनी ही जैसी उस शक्ति को जो इस नगर में कहीं पर छुपी हुई है!
इच्छाधारी शक्ति महानगर में चारों तरफ फैलने लगी-
और वह जिस वस्तु को भी छू लेती थी, उस वस्तु का रूप नया हो उठता था-
प्रकाश की सी गति से फैलती अद्भुत इच्छाधारी शक्ति ने-

महानगर में विनाश के एक नए तांडव को जन्म दे दिया था-

तबाही का एक नया दौर शुरू हो गया था-

और ऐसी किसी भी खबर की खबर सबसे पहले मिलती है भारती न्यूज चैनल को-

राज! राज! दरवाजा खोलो! महानगर में अजीब- अजीब चीजें हो रही हैं!

ये तो निशा है!

तुम कहीं छुपजाओ विसर्पी। लेकिन अब प्रिंटर में घुसने की जरूरत नहीं है!

क्या बात है निशा? क्या मुसीबत आ गई महानगर पर?

कांटों को पर लग गए हैं राज। बिल्डिंगें एक-दूसरे को बॉक्सरों की तरह आपस में लड़कर तोड़ रही हैं!

चलो, चलो!

हमको इस न्यूज को कवर करना है!

इच्छाधारी शक्ति यहां तक आ पहुंची है, विसर्पी!

ये त्रिशंकु की शक्ति है! मुझे ढूंढती हुई यहां तक आई है!

और अब ये मेरे राजदंड में भरी हुई नागद्वीप के सभी नागों की इच्छाधारी शक्ति को खींच रही हैं! मैं इसको रोक नहीं पा रही हूं! इस इच्छाधारी शक्ति को बचाने का एक ही तरीका है नागराज! तुम राजदंड में भरी इच्छाधारी शक्ति को धारण कर लो! एक बार तुम ऐसा पहले भी कर चुके हो नागराज! ☻

इच्छाधारी शक्ति का बहाव नागराज की नसों में दबाव मारने लगा! नसें फटने को बेताब होने लगीं-

सिर दर्द से फटने लगा-

लेकिन नागराज ने ठान ली थी कि अब इस पार या उस पार-

और जो इंसान ये ठान लेते हैं-

वे अक्सर मुसीबत का सागर पार करके उस पार ही उतरते हैं-

ठीक है विसर्पी! मैं तैयार हूं! लेकिन पहले जब मैंने ऐसा किया था तो नागों की थोड़ी-थोड़ी इच्छाधारी शक्ति धारण की थी!

लेकिन नागों की पूरी इच्छाधारी शक्ति मैं धारण कर पाऊंगा या उसके दबाव से फट जाऊंगा ये मुझे नहीं पता! मैं नागराज के रूप में आता हूं!

☻ इस विषय में अधिक जानने के लिए पढ़ें : कलयुग

त्रिशंकु के शरीर के साथ ही धुव भी इच्छाधारी शक्ति का पीछा करता हुआ, भारती कम्युनिकेशंस की इमारत तक आ पहुंचा था-
इसी भवन के अंदर है वह नागिन! अभी उसको बाहर निकालने का इंतजाम करता हूं!
इच्छाधारी शक्ति इमारत का रूप, तेजी से बदलने लगी-
और उसके अंदर से ऑफिसकर्मी झरने की तरह बाहर गिरने लगे-
लेकिन अचानक ऑफिसकर्मियों की यह बाढ़ थम गई-
आहा! भवन के मुंह में कुछ अटक रहा है! यह जरूर वही नागिन होगी जो बाहर निकलना नहीं चाहती! इसको ताकत लगा कर बाहर खींचना होगा!
ताकत लगी-
लेकिन बाहर आने वाला शख्स विसर्पी नहीं, नागराज था-
नागराज! तू यहां पर कैसे आ गया?
तुम मेरे बारे में जानते हो! जरूर नागद्वीप के सर्पों से तुमको मेरे बारे में पता चला होगा!
चलो अच्छा ही हुआ! मुझे परिचय देने की तकलीफ नहीं करनी पड़ी!

ओ! तो नागिन ने राजदंड की इच्छाधारी शक्ति तुझे दे दी है! पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा!
वह शक्ति मैं तुझसे ले लूंगा!
ये शक्ति तुमको वापस करनी होगी त्रिशंकु! ये तुम्हारी नहीं नागों की अमानत है!
ये शक्ति विश्वामित्र ने त्रिशंकु के लिए मेरा मतलब... मेरे लिए मंगाई थी!
अब मैं इस शक्ति से एक नई सृष्टि की रचना करूंगा! जिसका भगवान मैं होऊंगा! मेरी पूजा करेंगे लोग! और वह सृष्टि यहीं बनेगी! इसी धरती पर!

तभी-
ये... ये तुम क्या कह रहे हो सीथ्रू? इस शक्ति की मदद से तो हमको स्वर्ग को जीतना है! स्वर्ग में जाना हमारा पहला लक्ष्य है। इच्छाधारी शक्ति को यहां पर व्यर्थ मत करो!
तू होश में तो आ गया है त्रिशंकु! लेकिन काल-दूत के वार के कारण तू हमेशा जड़ अवस्था में रहेगा! इसीलिए तू तमाशा देखने के अलावा कुछ भी नहीं कर सकता! इसीलिए चुपचाप तमाशा देख! अरे जब मैं यहीं पर भगवान बन सकता हूं तो मैं स्वर्ग पर चढ़ाई करने का खतरा क्यों मोल लूं?
धोखा!
अब मैं नई सृष्टि की रचना करूंगा! और उसके लिए मुझको इस मौजूद सृष्टि को हटाना होगा! जब नया भगवान आ रहा है तो पुराने भगवान का यहां पर भला क्या काम?
तू भगवान नहीं शैतान है! और शैतानों को नागराज कभी कामयाब नहीं होने देगा! तू इच्छाधारी शक्ति छोड़ और मैं उसको सोखता जाऊंगा! फिर तू किससे बनाएगा अपनी सृष्टि?
मैंने कह तो दिया है, पर करना मुश्किल लग रहा है! मेरा शरीर शायद और ज्यादा इच्छाधारी शक्ति नहीं संभाल पाएगा! फट जाऊंगा मैं! और ये सृष्टि को तबाह करता जाएगा! क्या करूं मैं इसको रोकने के लिए?

सिर्फ बातें मत कर नागराज! शक्ति को सोखकर भी दिखा! यह शक्ति कालदूत की इच्छाधारी शक्ति है! तेरे पास सभी नागों की जितनी इच्छाधारी शक्ति मिलाकर है, कालदूत की अकेली इच्छाधारी शक्ति उससे भी ज्यादा है! तू शक्ति को सोख-सोखकर फट जाएगा! पर ये शक्ति कम नहीं होगी!

आ sss ह!

अब मैं और इच्छाधारी शक्ति ग्रहण नहीं कर सकता!

चारों तरफ की सृष्टि तेजी से बदलती जा रही थी-

एक तरीका है! अगर ये अपनी इच्छाधारी शक्ति के प्रयोग से सृष्टि को बदल रहा है तो मुझे अपनी इच्छाधारी शक्ति की मदद से सृष्टि को वापस अपने रूप में लाना होगा!

वार उल्टा पड़ रहा है! मेरी इच्छाधारी शक्ति को यह पानी की तरह पीता जा रहा है और महानगर और उसके निवासियों का रूप तेजी से बदलता जा रहा है!

इससे लड़ने का तरीका बदलना पड़ेगा, इसको भ्रम में डालना होगा!

सौडांगी! तुम तुरंत भारती के पास जाओ! और उनसे कहो कि वह दादा वेदाचार्य की मदद से...

तू इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके अच्छा कर रहा है नागराज! अब मैं तेरी इच्छाधारी शक्ति को सोखता जाऊंगा! ला और शक्ति मुझे दे!

नागराज, सौडांगी को योजना बताता चला गया-

ठीक है, नागराज! तुम थोड़ी देर तक इसे संभाले रखो!

और थोड़ी देर बाद-
ये... ये क्या हो रहा है? मेरे इच्छाधारी शक्ति के प्रयोग के बावजूद ये इमारतें अपने वास्तविक रूप में कैसे आ रही हैं?
मेरे द्वारा बनाए गए प्राणी भी इंसानों के रूप में बदल रहे हैं। कैसे?
ये तिलिस्मी शक्ति है! इस शक्ति के द्वारा भी नई वस्तुओं की रचना की जा सकती है! ये शक्ति ही तेरी इच्छाधारी शक्ति को काट रही है!
और अब मैं इच्छाधारी शक्ति से तेरा रूप धारण करूंगा! फिर मेरी शक्ति तेरी शक्ति के बराबर हो जाएगी! और फिर होगा तेरा...
अंत?
ये... ये क्या? मेरा शरीर तो जड़ हो गया है! मैं... मैं किसी भी शक्ति का प्रयोग नहीं कर पा रहा हूं!...
...मेरा रूप भी बदल रहा है!
तिलिस्मी गद्दे ने तुमको बचा लिया नागराज! पर तुमको हुआ क्या है?
ये तो जड़ हो गया है! इसके गले से तो आवाज तक नहीं निकल रही है!

ओफ़! अब न तो मैं इसकी इच्छाधारी शक्ति खींच सकता हूं और न ही तिलिस्मी शक्ति के कारण नई सृष्टि को बनाना शुरू कर सकता हूं। यह करने के लिए मुझे नागराज के शरीर में मौजूद इच्छाधारी शक्ति चाहिए! तब शायद मैं तिलिस्मी शक्ति को भी चुनौती दे सकूंगा!
लेकिन इसके लिए मुझे इंतजार करना पड़ेगा और नागराज पर नजर रखनी पड़ेगी!
नागराज एक बड़ी मुसीबत में फंस गया था-
नागराज को यह क्या हो गया है? यह इच्छाधारी रूप बदलते ही जड़ अवस्था में कैसे आ गया?
कुछ समझ में नहीं आ रहा है विसर्पी!
मुझे पता है! यह जड़ शक्ति मेरे वार से पैदा हुई है!
महात्मा कालदूत! आप यहां पर कैसे?
मुझे अपनी शक्ति वापस प्राप्त करने के लिए त्रिशंकु के पीछे तो आना ही आना था!
लेकिन जड़ का प्रयोग तो त्रिशंकु पर था! उस पर तो असर हुआ ही फिर नागराज पर शक्ति पर असर कैसे हो
नागराज ने उसका रूप धारण किया था!
ओह! उसका रूप लेने से उसकी शक्तियों के साथ उस पर चढ़ा वार का असर भी नागराज के ऊपर आ गया!
मैं अभी अपना वार वापस लेता हूं! फिर नागराज सामान्य हो जाएगा।
नागराज सामान्य तो हो गया था! लेकिन-
सोचना यह है कि आपका वार असरदार था, महात्मन, तो उसका असर त्रिशंकु पर भी हुआ होगा! पर वह असर नजर क्यों नहीं आया?
तुम्हारा मतलब है कि जो दिख रहा वह सच नहीं है!

हां! अगर मेरा शरीर जड़ हो सकता है तो त्रिशंकु का शरीर भी जड़ अवश्य हुआ होगा! और अगर उसका शरीर तब भी हरकत में था तो इसका एक ही अर्थ है। उसका शरीर कोई और चला रहा था!
कोई और? तुम्हारा मतलब है कि त्रिशंकु के शरीर में कोई और घुसा हुआ है। पर मैंने उससे बात की है। उसकी शक्ल जरूर बदली हुई थी लेकिन वह त्रिशंकु ही था! मैं धोखा नहीं खा सकता!
और उसका चेहरा किसका है इसका मुझे अंदाजा हो रहा है! क्योंकि इस शक्ल के एक शख्स ने पहले भी मेरी इच्छाधारी शक्ति चुराने की कोशिश की थी!
हम लड़कर त्रिशंकु से नहीं जीत सकते! लेकिन मेरे पास एक योजना है इस मुसीबत को खत्म करने की! सुनिए!
एक शरीर में दो प्राणी भी तो हो सकते हैं महात्मा कालदूत! जैसे मेरे शरीर में लाखों प्राणी रहते हैं!
हो सकता है! त्रिशंकु तो धरती पर आ ही नहीं सकता था! लेकिन अगर उसके शरीर में कोई और प्राणी है तो त्रिशंकु का शरीर धरती पर आ सकता है!
योजना बनने लगी–
किन दुश्मन की थिति भी मजबूत रही थी–
कालदूत द्वारा अपना जड़ र वापस लिए जाने के रण त्रिशंकु भी मुक्त हो या था–
हाऽऽऽहा! मैं इस वस्था में बाहर आ या सी थू! अब मैं तुझे ा करने का दंड दूंगा!
मत भूलो कि तुम मेरे कारण ही पृथ्वी पर वापस आ पाए हो त्रिशंकु! मुझे दंड देने के बाद तुम भी यहां पर नहीं रह पाओगे!
ठीक है! ठीक है! ये बहस हम बाद में भी कर सकते हैं!
अब नागराज को ढूंढो! अब हम उससे शक्ति खींच सकते हैं!
नागराज को ढूंढने की जरूरत नहीं है!
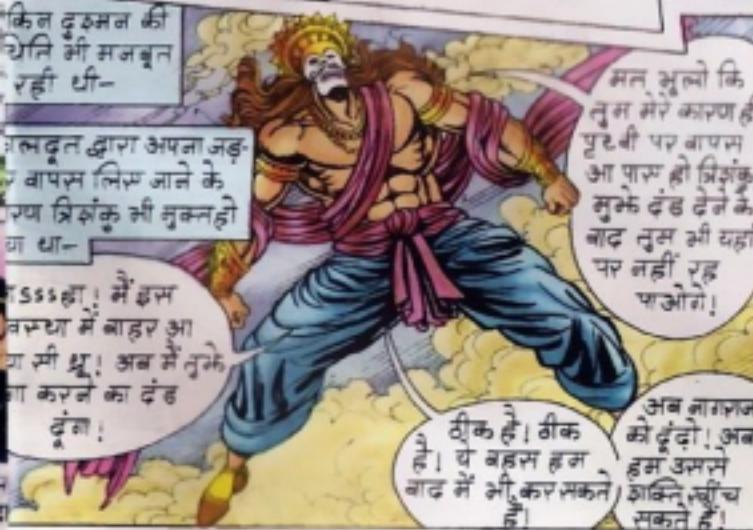
नागराज ही तुमको ढूंढ़ता हुआ यहां तक आ गया है!
तू... तू फिर से चलने-फिरने लगा, नागराज! अच्छा ही हुआ! क्योंकि अब हमारी... मेरा मतलब मेरी शक्ति भी बढ़ गई है!
अब तू अपनी इच्छाधारी शक्ति को खिंचने से नहीं बचा सकता! और एक बार तेरी इच्छाधारी शक्ति मुझे मिल गई फिर न तो मेरे सामने तिलिस्मी शक्ति ठहर पाएगी और न ही देव शक्ति!
तुझको हराने के लिए मेरी नागशक्ति ही काफी है। देख नागराज का प्रलयंकारी इच्छाधारी रूप!
इच्छाधारी रूप सिर्फ तू ही नहीं नागराज, मैं भी धारण कर सकता हूं!
पर तू ये याद रख! जितनी ज्यादा शक्ति तू इस्तेमाल करेगा...

उतना ही मुझको फायदा पहुंचेगा!
देख! तू तो इच्छाधारी रूप ही धारण कर पाता है लेकिन मैं इच्छाधारी प्राणी पैदा कर सकता हूं!
और इनको तू बगैर इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग किए नहीं मार सकता!
आऽऽऽह! सचमुच इन प्राणियों से सिर्फ नागशक्ति के बल पर जीत पाना असंभव है!
चिन्ता मत करो नागराज! इनसे निपटने के लिए नागू, शीतनाग और सौडांगी अभी भी मौजूद हैं!

तभी-

नागराज! नागराज! मैंने तुम्हारी समस्या का हल ढूंढ़ लिया है! इस समस्या का हल ये तिलिस्मी यंत्र है!

वाह! पर ये तिलिस्मी यंत्र काम कैसे करता है? कैसे करेगा ये मेरी मदद?

इस तिलिस्मी यंत्र को तुम अपनी गर्दन में पहन लो! फिर तुम बेहिसाब इच्छाधारी शक्ति सीख सकोगे लेकिन तुम्हारी इच्छाधारी शक्ति कोई नहीं छीन पाएगा!

वाह! दीजिए मुझे ये यंत्र! इसको मैं अभी पहन लेता हूं!

नहीं, नागराज! ऐसा मत करना!

पर क्यों विसर्पी?

मुझे लगता है कि ये नकली वेदाचार्य हैं! त्रिशंकु ने इसको अपनी इच्छाधारी शक्ति की मदद से बनाया है! इस यंत्र को पहनने से तुम्हारी इच्छाधारी शक्ति जरूर त्रिशंकु को मिल जाएगी!

ऐसा नहीं है विसर्पी! इच्छाधारी शक्ति से बने किसी भी प्राणी को मैं तुरन्त पहचान सकता हूं! ये असली वेदाचार्य ही हैं!

ठीक है! पर जांच करनी जरूरी है! तुमये यंत्र पहनकर मेरी इच्छाधारी शक्ति खींचने की कोशिश करो! अगर ऐसा हो गया तो ये यंत्र असली है! वेदाचार्य असली हैं!

वर्ना मैं इस यंत्र को तुरंत तोड़ कर तुमको आजाद कर दूंगी!

अगर ऐसा हुआ तो मैं खतरे में पड़ जाऊंगा! मुझे भी इस जांच पर नजर रखनी होगी!

जांच का नतीजा त्रिशंकु को चौंका देने वाला था-
अरे! नागराज उस नागिन राजकुमारी की इच्छाधारी शक्ति को उसके प्रतिरोध के बावजूद आराम से खींच ले रहा है! मुझे तिलिस्मी यंत्र को किसी भी कीमत पर हासिल करना होगा!
अगले ही पल- नागराज की गर्दन में अटका यंत्र खींच लिया गया-
लेकिन वह यंत्र नागराज से ज्यादा दूर नहीं जा पाया-
भीषण इच्छाधारी शक्तियों से युक्त दो प्राणियों में रस्साकशी हो रही थी! सवाल जिन्दगी और मौत का था-
और दांव पर लगी थी पूरी सृष्टि-
आऽऽऽह!
उम्म म म फ!
लेकिन नागराज की शक्तियां थोड़ी सी कमजोर थीं-

और तिलिस्मी यंत्र को थामें रखना अब नागराज के लिए असंभव होता जा रहा था-
नहीं!
उसकी हाथों की पकड़ खुलती चली गई-

और बिना कोई वक्त गंवाए त्रिशंकु ने वह यंत्र अपने गले में डाल लिया-
हा हा हा! तूने मेरी विजय का हार खुद ही मेरी गर्दन में डाल दिया है नागराज! अब यह हार, तेरी हार बनेगा!

मेरी हार क्यों बनेगा? तुम्हारे गले में है तो ये तुम्हारी ही हार बनेगा न?
आर्ररर्रघ! ये मुझे क्या हो रहा है! मैं... मैं तुम्हारे शरीर से अलग क्यों हो रहा हूं, त्रिशंकु?
मुझे कुछ नहीं पता सी धू!

पर तुझे पता कैसे चला कि मेरे शरीर में एक और प्राणी भी है?
ओह! सी धू के मेरे शरीर से निकलते ही मैं फिर से पृथ्वी लोक से दूर शून्य में लटकने के लिए जा रहा हूं!

अगर पता नहीं है तो मुझसे सुन लो न! ये तिलिस्मी यंत्र इच्छाधारी शक्ति नहीं खींचता, बल्कि एक शरीर में घुसे दो या दो से ज्यादा प्राणियों को अलग कर देता है!
इसका तुमने विसर्पी के ऊपर जो असर देखा था वह सिर्फ तुमको दिखाया गया एक नाटक था विसर्पी अपनी शक्ति स्वेच्छा से मुझे दे रही थी!
लेकिन इच्छाधारी शक्ति, पृथ्वी पर ही होने के कारण त्रिशंकु के साथ नहीं जा पाई है! मेरे शरीर में ही रह गई है!
और मैं... मैं इतनी इच्छाधारी शक्ति का दबाव नहीं सह सकता!

त्रिशंकु के अंतरिक्ष में ओझल होने के साथ-साथ, सी थ्रू का इच्छाधारी शक्ति से बना शरीर एक बार फिर फट पड़ा था-
और नागों से चुराई गई सारी इच्छाधारी शक्ति-
वापस नागों के पास पहुंच गई थी-
नागद्वीप एक बार फिर से आबाद हो गया था-
तुम्हारी योजना ने नागों को एक नई जिन्दगी दी है नागराज! वर्ना नागों का तो अस्तित्व नष्ट होने की कगार पर पहुंच गया था!
इसमें अगर वेदाचार्य की तिलिस्मी शक्ति ने मदद न की होती तो अवश्य ऐसा ही होता महात्मन!
लेकिन खतरा अभी पूरी तरह से दूर नहीं हुआ है! त्रिशंकु भी अभी सलामत है और सी थ्रू भी! और वे बगैर इच्छाधारी शक्ति पाए चैन से कभी नहीं बैठेंगे!
समाप्त.